



MICROFINANCE INSTITUTIONS NETWORK

Media Coverage Report

Utkarsh Small Finance Bank: Uplifting the Life of Underprivileged Women in Uttar Pradesh

Region: Varanasi

Media Coverage Index

S. No.	Date	Publication Name	Edition
1.	17.10.2021	Dainik Bhaskar	Varanasi
2.	17.10.2021	Rashtriya Sahara	Varanasi
3.	18.10.2021	Jagrukh Express	Varanasi
4.	17.10.2021	Spasth Awaaz	Varanasi
5.	18.10.2021	Aaj	Varanasi
6.	18.10.2021	Gyan Sikha Times	Varanasi
7.	20.10.2021	Swatantra Chetna	Varanasi
8.	20.10.2021	State Media	Varanasi
9.	20.10.2021	Kalbhairav	Varanasi

Publication	Dainik Bhaskar
Edition	Varanasi
Date	October 17, 2021
Page No.	11

उत्कर्ष स्मॉल फाइनेंस बैंक: उत्तर प्रदेश में जरूरतमंद महिलाओं की जिंदगी को बेहतर बना रहा है

वाराणसी। वाराणसी के पांडेयपुर इलाके में रहने वाली 35 वर्षीय लक्ष्मी की सफलता की कहानी इस बात का एक सच्चा प्रमाण है कि कड़ी मेहनत और कौशल में साथ मिलकर किसी के भी भाग्य को बदलने की शक्ति होती है।

लक्ष्मी के पति प्रेम कुमार निर्माण स्थलों पर काम करने वाले दिहाड़ी मजदूर थे और उनका वेतन छह लोगों के परिवार की बुनियादी जरूरतों को पूरा करने के लिए पर्याप्त नहीं था। लक्ष्मी हमेशा अपने परिवार की आर्थिक स्थिति को सुधारने के लिए कुछ बड़ा करने की इच्छा रखती थी इसलिए उसने खिलौने बनाना शुरू किया।

उन्हें अपने काम को आगे बढ़ाने के लिए पैसे की कमी महसूस हो रही थी और बिना किसी जमानत के लोन मिलना भी मुश्किल था। अपने पड़ोसी की सलाह पर, उन्होंने उत्कर्ष स्मॉल फाइनेंस बैंक की जॉइंट लायबिलिटी

ग्रुप मीटिंग में भाग लिया। इसकी प्रक्रिया को अच्छी तरह समझने के बाद उन्होंने 15,000 रुपये का अपना पहला माइक्रोफाइनेंस लोन लिया। इन पैसे से उन्होंने खिलौने बनाने के लिए जरूरी सामान लिया और इंटरप्रेन्योर बनने की अपनी यात्रा शुरू की। समय के साथ उन्होंने अपने ग्राहकों की मांग के आधार पर तरह-तरह के रंग-बिरंगे खिलौने बनाए। बाद में, उन्होंने घर को सजाने के लिए भी खिलौने बनाना शुरू कर दिया। पहले दो सालों में ही उन्हें महानगरों के खिलौना व्यवसायियों से ऑर्डर मिलने लगे। इसके साथ ही वाराणसी के प्रसिद्ध विश्वनाथ बाजार में 'लक्ष्मी ताई' द्वारा बेचे जाने वाले खिलौने पर्यटकों को भी पसंद आए। खिलौना बेचने के व्यवसाय से होने वाली मासिक आय ने लक्ष्मी को लोन की किस्ते चुकाने में मदद की और बाद में उन्होंने एक खिलौने की दुकान भी खोल ली।

Publication	Rashtriya Sahara
Edition	Varanasi
Date	October 17, 2021
Page No.	07

मदद व श्रम से बनायी जिंदगी बेहतर

पिण्डरा/वाराणसी (एसएनबी)। जस्मंद महिलाओं की जिंदगी को बेहतर बनाने की दिशा में तमाम संगठन व संस्थाएं प्रयासरत हैं। सहयोग के साथ अपनी कड़ी मेहनत से वाराणसी की लक्ष्मी ने भाग्य को बदल दिया। लक्ष्मी के पति प्रेम कुमार निर्माण स्थलों पर काम करने वाले दिहाड़ी मजदूर थे और उनका वेतन छह लोगों के परिवार की बुनियादी जरूरतों को पूरा करने के लिए पर्याप्त नहीं था। यहां बताया कि उन्होंने उत्कर्ष स्मॉल फाइनेंस बैंक की जॉइंट लायबिलिटी ग्रुप मीटिंग में भाग लिया। इसकी प्रक्रिया को अच्छी तरह समझने के बाद उन्होंने 15 हजार रु पये का अपना पहला माइक्रोफाइनेंस लोन लिया। इन पैसों से उन्होंने खिलौना बनाने के लिए जरूरी सामान लिया। मदद के साथ श्रम से उन्होंने खिलौना बनाने और बेचने का काम शुरू किया और धीरे-धीरे दुकान खोल ली। तीन साल के बाद उन्होंने कपड़े की दुकान खोल ली, जिसे वेटा संभाल रहा है।

Publication	Jagrukh Express
Edition	Varanasi
Date	October 18, 2021
Page No.	05

उत्कर्ष स्मॉल फाइनेंस बैंक : उत्तर प्रदेश में जरूतमंद महिलाओं की ज़िंदगी को बेहतर बना रहा है

वाराणसी। वाराणसी के पांडेयपुर इलाके में रहने वाली 35 वर्षीय लक्ष्मी की सफलता की कहानी इस बात का एक सच्चा प्रमाण है कि कड़ी मेहनत और कौशल में साथ मिलकर किसी के भी भाग्य को बदलने की शक्ति होती है।

लक्ष्मी के पति प्रेम कुमार निर्माण स्थलों पर काम करने वाले दिहाड़ी मजदूर थे और उनका वेतन छह लोगों के परिवार की बुनियादी जरूरतों को पूरा करने के लिए पर्याप्त नहीं था। लक्ष्मी हमेशा अपने परिवार की आर्थिक स्थिति को सुधारने के लिए कुछ बड़ा करने की इच्छा रखती थी इसलिए उसने खिलौने बनाना शुरू किया। उन्हें अपने काम को आगे बढ़ाने के लिए पैसों की कमी महसूस हो रही थी और बिना किसी जमानत के लोन मिलना भी मुश्किल था। अपने पड़ोसी की सलाह पर, उन्होंने उत्कर्ष स्मॉल फाइनेंस बैंक की जॉइंट लायबिलिटी ग्रुप मीटिंग में भाग लिया। इसकी प्रक्रिया को अच्छी तरह समझने के बाद उन्होंने 15,000 रुपये का अपना पहला माइक्रोफाइनेंस लोन लिया। इन पैसों से उन्होंने खिलौने बनाने के लिए जरूरी सामान लिया और इंटरप्रेन्योर बनने की अपनी यात्रा शुरू की। समय के साथ उन्होंने अपने ग्राहकों की मांग

के आधार पर तरह-तरह के रंग-बिरंगे खिलौने बनाए। बाद में, उन्होंने घर को सजाने के लिए भी खिलौने बनाना शुरू कर दिया। पहले दो सालों में ही उन्हें महानगरों के खिलौना व्यवसायियों से ऑर्डर मिलने लगे। इसके साथ ही वाराणसी के प्रसिद्ध विश्वनाथ बाजार में 'लक्ष्मी ताई' द्वारा बेचे जाने वाले खिलौने पर्यटकों को भी पसंद आए।

खिलौना बेचने के व्यवसाय से होने वाली मासिक आय ने लक्ष्मी को लोन की किस्तें चुकाने में मदद की और बाद में उन्होंने एक खिलौने की दुकान भी खोल ली। तीन साल बाद, उन्होंने 2017 में 20,000 रुपये और 2020 में 50,000 रुपये के लोन के लिए भी आवेदन किया। अब लक्ष्मी ने कपड़े बेचने के लिए भी एक दुकान ले ली है, जिसे उनका बड़ा बेटा संभालता है। उत्कर्ष स्मॉल फाइनेंस बैंक से मिली वित्तीय सहायता के जरिए वे अपने परिवार की वित्तीय स्थिति सुधारने के साथ ही अपने बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा भी दे पाईं।

लक्ष्मी उत्कर्ष स्मॉल फाइनेंस बैंक की बहुत आभारी हैं जिन्होंने उन्हें कठिन समय में लोन दिया। वे अपने दोस्तों और परिजनों को भी उत्कर्ष से जुड़ने के फायदे बताती हैं।

Publication	Spasth Awaaz
Edition	Varanasi
Date	October 17, 2021
Page No.	08

जरूरतमंद महिलाओं की जिंदगी को बेहतर बना रहा है

वाराणसी। वाराणसी के पांडेयपुर इलाके में रहने वाली 35 वर्षीय लक्ष्मी की सफलता की कहानी इस बात का एक सच्चा प्रमाण है कि कड़ी मेहनत और कौशल में साथ मिलकर किसी के भी भाग्य को बदलने की शक्ति होती है। लक्ष्मी के पति प्रेम कुमार निर्माण स्थलों पर काम करने वाले दिहाड़ी मजदूर थे और उनका वेतन छह लोगों के परिवार की बुनियादी जरूरतों को पूरा करने के लिए पर्याप्त नहीं था। लक्ष्मी हमेशा अपने परिवार की आर्थिक स्थिति को सुधारने के लिए कुछ बड़ा करने की इच्छा रखती थी इसलिए उसने खिलौने बनाना शुरू किया। उन्हें अपने काम को आगे बढ़ाने के लिए पैसों की कमी महसूस हो रही थी और बिना किसी जमानत के लोन मिलना भी मुश्किल था। अपने पड़ोसी की सलाह पर, उन्होंने उत्कर्ष स्मॉल फ़ाइनेंस बैंक की जॉइंट लायबिलिटी ग्रुप मीटिंग में भाग लिया। इसकी प्रक्रिया को अच्छी तरह समझने के बाद उन्होंने 15,000 रुपये का अपना पहला माइक्रोफ़ाइनेंस लोन लिया। इन पैसों से उन्होंने खिलौने बनाने के लिए जरूरी सामान लिया और इंटरप्रेन्योर बनने की अपनी यात्रा शुरू की। एनबीएफ़सी-एमएफ़आई देश में एकमात्र विनियमित वित्तीय संस्थान हैं जो कम आय वाले परिवारों को बिना किसी जमानत के लोन देते हैं। ये संस्थाएं उन महिलाओं के लिए क्रेडिट गैप भरती हैं जिनके पास किसी भी प्रकार की जमानत या सुरक्षा प्रदान करने के लिए साधन नहीं हैं।

Publication	Aaj
Edition	Varanasi
Date	October 18, 2021
Page No.	05

कड़ी मेहनत से बदल सकता हैं भाग्य

कड़ी मेहनत और कौशल से कोई भी अपने भाग्य को बदल सकता है। इसका जीता जागता उदाहरण हैं पांडेयपुर इलाके में रहने वाली 35 वर्षीय लक्ष्मी लक्ष्मी हमेशा अपने परिवार की आर्थिक स्थिति को सुधारने के लिए कुछ बड़ा करने की इच्छा रखती थी इसलिए उसने खिलौने बनाना शुरू किया। उन्हें अपने काम को आगे बढ़ाने के लिए पैसों की कमी महसूस हो रही थी और बिना किसी जमानत के लोन मिलना भी मुश्किल था। अपने पड़ोसी की सलाह पर, उन्होंने उत्कर्ष स्मॉल फाइनेंस बैंक की जॉइंट लायबिलिटी ग्रुप मीटिंग में भाग लिया। इसकी प्रक्रिया को अच्छी तरह समझने के बाद उन्होंने लोन लिया। इन पैसों से उन्होंने खिलोने बनाने के लिए जरूरी सामान लिया और इंटरप्रेन्योर बनने की अपनी यात्रा शुरू की। समय के साथ उन्होंने अपने ग्राहकों की मांग के आधार पर तरह-तरह के रंग-बिरंगे खिलौने बनाए।

Publication	Gyan Sikha Times
Edition	Varanasi
Date	October 18, 2021
Page No.	04

जरूरतमंद महिलाओं की जिंदगी को बेहतर बना रहा है

वाराणसी। वाराणसी के पांडेयपुर इलाके में रहने वाली 35 वर्षीय लक्ष्मी की सफलता की कहानी इस बात का एक सच्चा प्रमाण है कि कड़ी मेहनत और कौशल में साथ मिलकर किसी के भी भाग्य को बदलने की शक्ति होती है। लक्ष्मी के पति प्रेम कुमार निर्माण स्थलों पर काम करने वाले दिहाड़ी मजदूर थे और उनका वेतन छह लोगों के परिवार की बुनियादी जरूरतों को पूरा करने के लिए पर्याप्त नहीं था। लक्ष्मी हमेशा अपने परिवार की आर्थिक स्थिति को सुधारने के लिए कुछ बड़ा करने की इच्छा रखती थी इसलिए उसने खिलौने बनाना शुरू किया। उन्हें अपने काम को आगे बढ़ाने के लिए पैसों की कमी महसूस हो रही थी और बिना किसी जमानत के लोन मिलना भी मुश्किल था। अपने पड़ोसी की सलाह पर, उन्होंने उत्कर्ष स्मॉल फ़इनेंस बैंक की जॉइंट लायबिलिटी ग्रुप मीटिंग में भाग लिया। इसकी प्रक्रिया को अच्छी तरह समझने के बाद उन्होंने 15,000 रुपये का अपना पहला माइक्रोफ़इनेंस लोन लिया। इन पैसों से उन्होंने खिलौने बनाने के लिए जरूरी सामान लिया और इंटरप्रेन्योर बनने की अपनी यात्रा शुरू की। समय के साथ उन्होंने अपने ग्राहकों की मांग के आधार पर तरह-तरह के रंग-बिरंगे खिलौने बनाए। बाद में, उन्होंने घर को सजाने के लिए भी खिलौने बनाना शुरू कर दिया। पहले दो सालों में ही उन्हें महानगरों के खिलौना व्यवसायियों से ऑर्डर मिलने लगे। इसके साथ ही वाराणसी के प्रसिद्ध विश्वनाथ बाजार में शलक्ष्मी टाईशू द्वारा बेचे जाने वाले खिलौने पर्यटकों को भी पसंद आए। खिलौना बेचने के व्यवसाय से होने वाली मासिक आय ने लक्ष्मी को लोन की किस्तें चुकाने में मदद की और बाद में उन्होंने एक खिलौने की दुकान भी खोल ली। तीन साल बाद, उन्होंने 2017 में 20,000 रुपये और 2020 में 50,000 रुपये के लोन के लिए भी आवेदन किया। अब लक्ष्मी ने कपड़े बेचने के लिए भी एक दुकान ले ली है, जिसे उनका बड़ा बेटा संभालता है। उत्कर्ष स्मॉल फ़इनेंस बैंक से मिली वित्तीय सहायता के जरिए वे अपने परिवार की वित्तीय स्थिति सुधारने के साथ ही अपने बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा भी दे पाई।

Publication	Swatantra Chetna
Edition	Varanasi
Date	October 20, 2021
Page No.	03

उत्तर प्रदेश में जरूतमंद महिलाओं की जिंदगी को बेहतर बना रहा है उत्कर्ष स्मॉल फाइनेंस बैंक

वाराणसी। वाराणसी के पांडेयपुर इलाके में रहने वाली ३५ वर्षीय लक्ष्मी की सफलता की कहानी इस बात का एक सच्चा प्रमाण है कि कड़ी मेहनत और कौशल में साथ मिलकर किसी के भी भाग्य को बदलने की शक्ति होती है। लक्ष्मी के पति प्रेम कुमार निर्माण स्थलों पर काम करने वाले दिहाड़ी मजदूर थे और उनका वेतन छह लोगों के परिवार की बुनियादी जरूरतों को पूरा करने के लिए पर्याप्त नहीं था। लक्ष्मी हमेशा अपने परिवार की आर्थिक स्थिति को सुधारने के लिए कुछ बड़ा करने की इच्छा रखती थी इसलिए उसने खिलौने बनाना शुरू किया। उन्हें अपने काम को आगे बढ़ाने के लिए पैसों की कमी महसूस हो रही थी और बिना किसी जमानत के लोन मिलना भी मुश्किल था। अपने पड़ोसी की सलाह पर उन्होंने उत्कर्ष स्मॉल फाइनेंस बैंक की जॉइंट लायबिलिटी ग्रुप मीटिंग में भाग लिया।

Publication	State Media
Edition	Varanasi
Date	October 20, 2021
Page No.	04

उत्कर्ष स्माल फाइनेंस बैंक जरूतमंद महिलाओं की जिंदगी बेहतर बना रहा

वाराणसी (स्टेट मीडिया) पांडेयपुर इलाके में रहने वाली 35 वर्षीय लक्ष्मी की सफलता की कहानी इस बात का एक सच्चा प्रमाण है कि कड़ी मेहनत और कौशल में साथ मिलकर किसी के भी भाग्य को बदलने की शक्ति होती है। लक्ष्मी के पति प्रेम कुमार निर्माण स्थलों पर काम करने वाले दिहाड़ी मजदूर थे और उनका वेतन छह लोगों के परिवार की बुनियादी जरूरतों को पूरा करने के लिए पर्याप्त नहीं था। लक्ष्मी हमेशा अपने परिवार की आर्थिक स्थिति को सुधारने के लिए कुछ बड़ा करने की इच्छा रखती थी इसलिए उसने खिलौने बनाना शुरू किया। उन्हें अपने काम को आगे बढ़ाने के लिए पैसों की कमी महसूस हो रही थी और बिना किसी जमानत के लोन मिलना भी मुश्किल था। अपने पड़ोसी की सलाह पर, उन्होंने उत्कर्ष स्माल फाइनेंस बैंक की जॉइंट लायबिलिटी ग्रुप मीटिंग में भाग लिया। इसकी प्रक्रिया को अच्छी तरह समझने के बाद उन्होंने 15,000 रुपये का अपना पहला माइक्रोफाइनेंस लोन लिया। इन पैसों से उन्होंने खिलौने बनाने के लिए जरूरी सामान लिया और इंटरप्रेन्योर बनने की अपनी यात्रा शुरू की। समय के साथ उन्होंने अपने ग्राहकों की मांग के आधार पर तरह-तरह के रंग-बिरंगे खिलौने बनाए। बाद में, उन्होंने घर को सजाने के लिए भी खिलौने बनाना शुरू कर दिया। पहले दो सालों में ही उन्हें महानगरों के खिलौना व्यवसायियों से ऑर्डर मिलने लगे।

Publication	Kalbhairav
Edition	Varanasi
Date	October 20, 2021
Page No.	02

उत्कर्ष स्माल फाइनेंस बैंक जरूतमंद महिलाओं की जिंदगी को बेहतर बना रहा है

वाराणसी। वाराणसी के पांडेयपुर इलाके में रहने वाली ३५ वर्षीय लक्ष्मी की सफलता की कहानी इस बात का एक सच्चा प्रमाण है कि कड़ी मेहनत और कौशल में साथ मिलकर किसी के भी भाग्य को बदलने की शक्ति होती है। लक्ष्मी के पति प्रेम कुमार निर्माण स्थलों पर काम करने वाले दिहाड़ी मजदूर थे और उनका वेतन छह लोगों के परिवार की बुनियादी जरूरतों को पूरा करने के लिए पर्याप्त नहीं था। लक्ष्मी हमेशा अपने परिवार की आर्थिक स्थिति को सुधारने के लिए कुछ बड़ा करने की इच्छा रखती थी इसलिए उन्होंने खिलौने बनाना शुरू किया। उन्हें अपने काम को आगे बढ़ाने के लिए 2/6 क महसूस हो रही थी और बिना किसी जमानत के लोन मिलना भी मुश्किल था। अपने पड़ोसी की सलाह पर, उन्होंने उत्कर्ष स्माल फाइनेंस बैंक की जहड़ट लायबिलिटी ग्रुप मीटिंग में भाग लिया। इसकी प्रक्रिया को अच्छी तरह समझने के बाद उन्होंने १५,००० रुपये का अपना पहला माइक्रोफाइनेंस लोन लिया। इन पैसों से उन्होंने खिलौने बनाने के लिए जरूरी सामान लिया और इंटरप्रेन्योर बनने की अपनी यात्रा शुरू की। समय के साथ उन्होंने अपने ग्राहकों की मांग के आधार पर तरह-तरह के रंग-बिरंगे खिलौने बनाए। बाद में, उन्होंने घर को सजाने के लिए भी खिलौने बनाना शुरू कर दिया। पहले दो सालों में ही उन्हें महानगरों के खिलौना व्यवसायियों से अहर्दर मिलने लगे। इसके साथ ही वाराणसी के प्रसिद्ध विश्वनाथ बाजार में लक्ष्मी ताईश द्वारा बेचे जाने वाले खिलौने पर्यटकों को भी पसंद आए। खिलौना बेचने के व्यवसाय से होने वाली मासिक आय ने लक्ष्मी को लोन की किस्तें चुकाने में मदद की और बाद में उन्होंने एक खिलौने की दुकान भी खोल ली। तीन साल बाद, उन्होंने २०१७ में २०,००० रुपये और २०२० में ५०,००० रुपये के लोन के लिए भी आवेदन किया। अब लक्ष्मी ने कपड़े बेचने के लिए भी एक दुकान ले ली है, जिसे उनका बड़ा बेटा संभालता है। उत्कर्ष स्माल फाइनेंस बैंक से मिली वित्तीय सहायता के जरिए वे अपने परिवार की वित्तीय स्थिति सुधारने के साथ ही अपने बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा भी दे पाई। लक्ष्मी उत्कर्ष स्माल फाइनेंस बैंक की बहुत आभारी हैं जिन्होंने उन्हें कठिन समय में लोन दिया। वे अपने दोस्तों और परिजनों को भी उत्कर्ष से जुड़ने के फायदे बताती हैं।